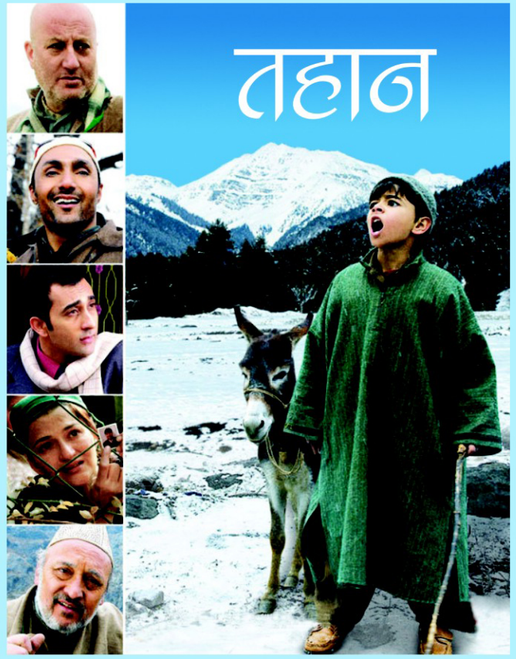

तहान दो दोस्तों की कहानी है – तहान और बीरबल की। तहान है आठ साल का कश्मीरी लड़का और बीरबल है उसका गधा। दोनों साथ खेलते हैं, साथ काम करते हैं। तहान बीरबल को बहुत प्यार करता है और बीरबल तहान को। तहान के पिता कुछ साल से घर वापिस नहीं आए हैं। घर में माँ और बड़ी बहन ज़ोया और बाबा है। बाबा उसे कहानियाँ सुनाते हैं। ऐसी कहानियाँ जिनमें एक रोशनी की किरण आएगी और सारे घर को खुशियों से भर देगी। कालीन पर बनी तितलियाँ ज़िन्दा हो जाएँगी और पूरे घर में उड़ा करेंगी। तहान और बीरबल दोनों कश्मीर के बदलते माहौल को देखते हैं। उजड़े हुए घर देखते हैं। रोती हुई औरतें देखते हैं। अपनों की तस्वीर के सहारे उनकी खोज में लगे हुए लोगों के आँसू देखते हैं।

कश्मीर में खूबसूरती और अकेलेपन का खौफ एक साथ मौजूद है। उजाड़ पड़े कश्मीरी पंडितों के घरों को देखकर तहान घबरा जाता है। बीरबल जाने कहाँ भाग जाता है। तहान और बीरबल दोनों को अकेलेपन से डर लगता है। जमी हुई झील पर चलने से भी ज़्यादा डरावना है अकेलेपन का डर।

एक दिन तहान के बाबा की मौत हो जाती है और बीरबल को बेच दिया जाता है। तहान बीरबल को वापिस पाने के लिए क्या-क्या नहीं करता! अब दोस्त के बिना रहा भी तो नहीं जाता ना! और फिर बीरबल भी तो तहान के बिना नहीं रह पाता यह भी सबको मालूम है। एक दौड़ होती है बीरबल और जफर के खच्चरों के बीच। और बीरबल खच्चरों को दौड़ में हरा देता है! लेकिन फिर भी तहान को बीरबल नहीं मिलता। जफर कहता भी है.. "हमारी किस्मत में गधे नहीं लिखे दोस्त।" और ऐसे ही बीरबल को पाने की कोशिश में तहान को एक ऐसा काम करने को कहा जाता है जो औरों को नुकसान पहुँचा सकता है। अब तहान क्या करे? क्या बीरबल को पाने के लिए वो कोई ऐसा काम करे जो ठीक ना हो? मैं तुम्हें फिल्म का अन्त तो नहीं बताऊँगा लेकिन तुम तहान के लिए ज़्यादा परेशान ना हो इसलिए बता देता हूँ कि आखिर में सब ठीक हो जाता है!

तहान की सिनेमेटोग्राफी कमाल की है। खासकर एक जगह गरम-सुलगते कोयले के बीच चटकती बर्फ का दृश्य आपमें बहुत अलग-सा अहसास भर देता है। इसकी कोई खास वजह? है ना.. फिल्म के निर्देशक सन्तोष सिवान मूलतः एक सिनेमेटोग्राफर हैं। उनका ट्रेन के ऊपर फिल्माया *दिल से* का गाना "छैयाँ छैयाँ" तो सबको याद होगा ही। सन्तोष इससे पहले भी एक लड़की और उसके प्यारे पिल्ले "हैलो" की कहानी हमें सुना चुके हैं। *तहान* में कश्मीर की खूबसूरती के साथ अकेलेपन को भी कैमरे ने बखूबी कैद किया है। चकमक

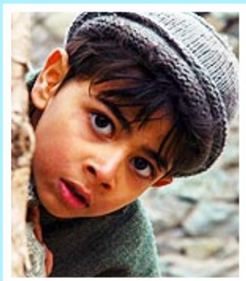

इस फिल्म में तहान का किरदार निभाया है पूरव भण्डारे ने। यह फिल्म उनके कमाल के अभिनय के लिए भी याद की जाएगी।

कुछ खास बातें जो *तहान* से पता चलीं!

- गधे से बात करते वक्त उसके एक कान में बात कहनी चाहिए और दूसरा कान बन्द कर देना चाहिए। नहीं तो वो बात को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता है।
- ज़िन्दगी एक दास्तान है। इसमें बहुत सारी छोटी-छोटी कहानियाँ बिखरी होती हैं। और हर कहानी का एक मकसद होता है।
- कई बार गधे और खच्चर की दौड़ में गधा भी जीत जाता है।
- खुदा ने गधे को ऐसी जगह पर दो आँखें दी हैं कि वह अपने पीछे भी देख सकता है! इसलिए उसे बिल्कुल ठीक-ठीक पता चल जाता है कि कब और कहाँ दुलत्ती मारनी है।
- चाहे इंसान हो चाहे जानवर, आखिर में करते सब अपने मन की ही हैं।
- ये पहाड़, ये वादियाँ, ये दिलकश नज़ारे सब किसके हैं? इस सवाल का जवाब कुछ उल्टा है। दरअसल हम सब इन पहाड़ों, नदियों, वादियों के हैं। अगर तुम ध्यान से देखो तो हम सब अपने आसपास की प्रकृति का ही तो हिस्सा हैं।
- अगर कड़ाके की ठण्ड है और कई दिनों से लगातार बर्फबारी हो रही है तो एक बात तो तय है कि उसके बाद सूरज निकलेगा और चमकती धूप खिलेगी। ऐसे ही अगर ज़िन्दगी में बहुत सारे गम एक साथ आ जाएँ और सब मुश्किल लगने लगे तो मानकर चलो कि खुशियों का मौसम दरवाज़े पर खड़ा इन्तज़ार कर रहा है। वो बस आने ही वाला है।

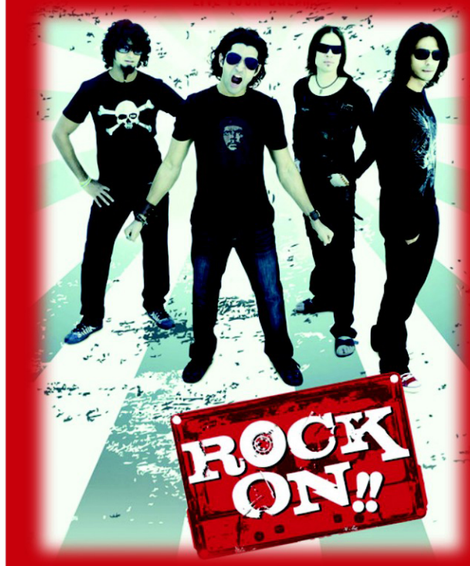

सोचा है, सोचा नहीं तो सोचो अभी

आस्मां है नीला क्यों, पानी गीला-गीला क्यों
गोल क्यों है ज़मीन, सिल्क में है नरमी क्यों
आग में है गरमी क्यों, दो और दो पाँच क्यों नहीं..
पेड़ हो गए कम क्यों, तीन हैं ये मौसम क्यों
चाँद दो क्यों नहीं, दुनिया में है जंग क्यों
बहता लाल रंग क्यों, सरहदें हैं क्यों हर कहीं
सोचा है ...

बहती क्यों है हर नदी, होती क्या है रोशनी
बर्फ गिरती है क्यों, दोस्त क्यों है रूठते
तारे क्यों है टूटते, बादलों में बिजली है क्यों
सोचा है ...

सन्नाटा सुनाई नहीं देता, और हवाएँ दिखाई नहीं देतीं
सोचा है क्या कभी, होता है यह क्यों...
सोचा है ....

फिल्मः **रॉक ऑन**
गायकः **फरहान अख्तर**
गीतकारः **जावेद अख्तर**
संगीतकारः **शंकर, अहसान, लॉय**